इकाई 12 उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद*

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 उपनिवेशवाद क्या है?

12.3 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद

12.4 साम्राज्यवाद के सिद्धांत

12.5 उपनिवेशवाद : एक उत्पादन पद्धति या एक सामाजिक विन्यास

12.6 औपनिवेशिक राज्य

12.7 उपनिवेशवाद के चरण

- 12.7.1 पहला चरण
- 12.7.2 दूसरा चरण
- 12.7.3 तीसरा चरण

12.8 सारांश

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे;
- साम्राज्यवाद की विभिन्न धारणाओं को जान सकेंगे;
- महानगरीय (साम्राज्यवादी) देश (मेट्रोपोलिस) और उपनिवेश के आपसी रिश्ते को समझ सकेंगे; और
- उपनिवेशवाद के विभिन्न चरणों और उनकी खास विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

अठारहवीं शताब्दी के बाद प्रमुख यूरोपीय शक्तियों द्वारा पूरी दुनिया में अपने उपनिवेश स्थापित कर लिए जाने से अब आधुनिक यूरोप का इतिहास विश्व का इतिहास बन गया। पूँजीवाद, अपने स्वभाव से, एक विश्व व्यवस्था था। बाजारों और कच्चे माल के स्रोतों पर एकाधिकार स्थापित करना इसके विस्तार का मकसद था। उन्नीसवीं शताब्दी तक आते-आते एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देश यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक क्षेत्र बन गए। इन औपनिवेशिक क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच अनगिनत युद्ध हुए। यूरोप शक्तियों के कई आपसी टकराव वाले केंद्रों में विभाजित हो गया। यह समझौतों की पद्धति के तहत हुआ तथा इसकी जरूरत उन साम्राज्यवादी शक्तियों को महसूस हुई जिनका प्रवेश पूंजीवादी व्यवस्था में देर से हुआ और

*डॉ. सुचेता महाजन, सेंटर फार हिस्टौरिकल स्टडीज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

वे भी इस व्यवस्था से उत्पन्न लाभों में अपना हिस्सा सुनिश्चित करना चाहते थे। उपनिवेशों की इस अंधी दौड़ में उन्नीसवीं और आरंभिक बीसवीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिद्वंद्विता और तनाव का माहौल बना।

उपनिवेशों में स्थापित व्यवस्था को उपनिवेशवाद का नाम दिया गया। पिछली आधी शताब्दी में पूरी दुनिया में इस व्यवस्था की अवनति हुई और यह टूटने लगी। साम्राज्यों के हाथ से निकलने के कारण प्रमुख साम्राज्यवादी शक्ति ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका पर आश्रित देश रह गया। यह बड़ा ही रोचक तथ्य है कि उपनिवेशवाद की समाप्ति के साथ दुनिया की तस्वीर पूरी तरह बदल गई ठीक वैसे ही जैसे इसकी स्थापना के समय हुआ था। उपनिवेशों को आजादी हासिल हुई और इसके फलस्वरूप दुनिया की राजनीति में तीसरी दुनिया की एक महत्वपूर्ण भूमिका हो गई। उत्तर-औपनिवेशिक शब्दावली का इस्तेमाल इस बात का द्योतक है कि उपनिवेशवाद से गुजरे हर देश में एक समानता यह है कि उनका एक औपनिवेशिक अतीत था। यह औपनिवेशिक अतीत आज भी उनके वर्तमान को प्रभावित करता है।

इस इकाई में हमने आधुनिक पूँजीवादी युग में उपनिवेशवाद की प्रकृति और साम्राज्यवाद के विभिन्न सिद्धांतों पर विचार-विमर्श किया है। हमने उपनिवेश और आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) के बीच के संबंधों और उपनिवेशवाद के चरणों पर विशेष बल दिया है। हमने उपनिवेशवाद के विभिन्न रूपों और किसी खास उपनिवेश में इसके प्रभाव की विशिष्टताओं पर अलग-अलग विचार करने के बजाय हमने उपनिवेशवाद पर एक परिघटना के रूप में विचार किया है। अगली इकाई में हम तीन देशों का उदाहरण सामने रखेंगे और अध्ययन करेंगे।

12.2 उपनिवेशवाद क्या है?

'उपनिवेशवाद' की प्रकृति का अध्ययन करने से पहले, आइए, इस शब्द के इतिहास पर विचार किया जाए।

उपनिवेशवाद पर सबसे पहले मार्क्स और एंगेल्स ने टिप्पणी की थी। उन्होंने आयरलैंड पर औपनिवेशिक (वर्चस्व) आधिपत्य के बारे में लिखा था। मुख्य रूप से आर्थिक दृष्टि से उपनिवेशवाद की पहली आलोचना उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में आरंभिक भारतीय राष्ट्रवादियों, जैसे दादाभाई नौरोजी, महादेव रानाडे, रमेशचंद दत्त और अन्य लोगों ने की थी। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा धन बाहर भेजे जाने को उन्होंने धन की निकासी अथवा अपवहन की संज्ञा दी थी। ईस्ट इंडिया कम्पनी लूट-खसोट कर, गृह-शुल्कों, या सरकारी खर्चे के नाम पर तथा पूँजी का निजी हस्तांतरण कर भारत का धन इंग्लैंड भेजती थी। इसे ही राष्ट्रवादियों ने धन की निकासी कहा। हॉबसन ने 1902 में अपनी पुस्तक *इम्परियलिज्म* प्रकाशित की और इस पर प्रकाश डाला। इस परिघटना को समझने में वित्तीय पूँजीवाद पर रूडोल्फ हिल्फरडिंग के लेखों, पूँजीवादी संचय पर रोजा लक्जेमबर्ग की पुस्तक और लेनिन की *इम्परियलिज्म, द हाइएस्ट स्टेज ऑफ कैपिटलिज्म* से काफी सहायता मिली। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, इन्डोनेसिया आदि में 1920 और 1930 के दशकों में साम्राज्यवादी संबंधी अध्ययन किए गए जिससे इस परिघटना को समझने के लिए नए दृष्टिकोण सामने आए। 1960 के दशक के सफल स्वाधीनता आंदोलनों और क्यूबाई और अल्जीरियाई क्रांतियों के कारण उपनिवेशवाद पर काफी ज्यादा लेखन हुआ। इस क्षेत्र में आन्द्रे गुन्डर फ्रैंक, सी फर्टाडो, थियोडोरे डोस सैन्टोसा, पाउल प्रेबिस, पॉल बारन, समीर आमीन, इमैनूअल वालनस्टीन, आरघिरी इमैनूअल और एफ. कारडोसो का योगदान उल्लेखनीय है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

डिपेंडेंसी स्कूल (निर्भरता सिद्धांत) की प्रथम धारा के विचारकों के अनुसार उपनिवेशों के राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हो जाने के बावजूद उनकी आर्थिक निर्भरता तब तक बनी रहेगी जब तक पूँजीवादी व्यवस्था रहेगी क्योंकि उपनिवेशवाद के अधीन उनका अल्प-विकास हुआ है। उनके अनुसार बुर्जुआ वर्ग आर्थिक विकास का जिम्मा अपने ऊपर लेने में असक्षम है। समाजवादी क्रांति के द्वारा ही निर्भर अर्थव्यवस्थाएं स्वतंत्र हो सकती हैं। भारत के उदाहरण ने डिपेंडेंसी स्कूल की विचारधारा पर प्रश्न चिह्न लगा दिया जहाँ स्वतंत्र बुर्जुआ वर्ग ने पूँजीवाद का विकास किया।

इमैनूअल वालनस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम स्कूल (विश्व व्यवस्था सिद्धांत) इसका दूसरा प्रकार है। उन्होंने एक पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था की बात की और इसे केंद्र और परिधि में विभाजित किया। इस विशिष्ट विचारधारा की अनेक विशेषताएं हैं:

1) केंद्रीय अर्थव्यवस्थाओं से उच्च मूल्य उत्पाद जुड़े होते हैं जबकि परिधि की अर्थव्यवस्था में निम्न प्रौद्योगिकी और निम्न मजदूरी की दरें शामिल होती है।
2) असमान विनिमय या अधिशेष का निर्यात दूसरी विशेषता है।
3) केन्द्र के पूँजीवादी राज्य मजबूत होते हैं जबकि परिधीय राज्य कमजोर होते हैं।
4) एक कमजोर देशी बुर्जुआ वर्ग।
5) इसकी अर्थव्यवस्था पर विदेशी पूँजी का वर्चस्व पाँचवी विशेषता है।

वर्ल्ड सिस्टम सिद्धांत ने अर्ध-परिधीय की एक तीसरी श्रेणी का भी उल्लेख किया। इसमें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में राज्य के अपेक्षाकृत अधिक नियंत्रण वाले देशों का उल्लेख किया गया। आर्थिक राष्ट्रवाद इन राज्यों की प्रमुख विशेषता थी। विश्व व्यवस्था के इस सिद्धांत के अन्तर्गत उपनिवेश की स्थिति में सुधार की गुंजाइश है।

कैबरल, फ्रैंज फेनन और एडवर्ड सईद ने उपनिवेशवाद के सांस्कृतिक पक्षों पर विचार किया है। विपनचंद्र ने औपनिवेशिक ढाँचे, औपनिवेशिक आधुनिकीकरण, उपनिवेशवाद के चरणों और औपनिवेशिक राज्य का अध्ययन किया है।

12.3 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक तरफ से देखने से यह उपनिवेशवाद है, दूसरी तरफ से देखने से साम्राज्यवाद। आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) की तरफ से देखने से यह साम्राज्यवाद है जबकि उपनिवेश की दृष्टि से देखने पर यह उपनिवेशवाद है। ब्रिटेन में औद्योगिक पूँजीवाद के समान ही उपनिवेशवाद भी आधुनिक परिघटना है। दोनों का विकास साथ-साथ हुआ है। उपनिवेश के आधुनिक ऐतिहासिक विकास में उपनिवेशवाद एक विशिष्ट ऐतिहासिक चरण या युग है, जिसने परम्परागत अर्थव्यवस्था और आधुनिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के बीच हस्तक्षेप किया। यह पूर्णरूप से एक सुसंगठित और विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था है जिसमें अर्थव्यवस्था और समाज पर विदेशी पूँजीपति वर्ग का नियंत्रण होता है। उपनिवेश में यह व्यवस्था एक आश्रित और अधीनस्थ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और बौद्धिक संरचना के तहत क्रियाशील होती है। इस संरचना का रूप पूँजीवाद के विश्वव्यापी ऐतिहासिक विकास के बदलते परिवेशों से प्रभावित होने के कारण अलग-अलग होता है।

औपनिवेशिक समाजों के अधिकांश विद्वान उपनिवेशवाद की विशिष्ठता को ठीक से समझ नहीं सके। एक विचार यह प्रचलित है कि औपनिवेशिक समाज एक परम्परागत समाज था

जहाँ उत्पादन के पुराने संबंध मौजूद रहे थे। यहाँ केवल विदेशी राजनैतिक आधिपत्य ही स्थापित हुआ। परंतु उपनिवेशवाद औपनिवेशिक नीति मात्र नहीं है। यह मात्र राजनैतिक आधिपत्य भी नहीं है। यह एक ढाँचा है। एक अन्य धारणा के अनुसार उपनिवेशवाद एक संक्रमणकालीन समाज था जो आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा था और धीरे-धीरे इसे समय के साथ विकसित पूँजीवादी समाज में परिणत हो जाना था। क्या सचमुच उपनिवेशवाद का संबंध केवल सीमित आधुनिकीकरण से है? क्या उपनिवेश आधुनिक राज्यों में परिणत हो सकते थे? निश्चित रूप से नहीं। कुछ वामपंथी लेखक 'प्रतिबंधित विकास' की बात करते हैं और उनका मानना है कि उपनिवेशवाद एक अधूरा पूंजीवादी विकास था। अर्थव्यवस्था में उपस्थित पूर्व-पूँजीवादी तत्वों ने पूर्ण पूँजीवादी विकास को बाधित किया। यह भी माना गया कि पूँजीवादी व्यवस्थाओं से अलग जो कुछ भी विशेषताएं थी वह पूर्व-पूँजीवादी थी। अधिकांश लेखक ऐसे औपनिवेशिक समाज की कल्पना नहीं कर सकते थे जो न तो पूँजीवादी हो और न ही पूर्व-पूँजीवादी। उदाहरण के लिए, भारत में औपनिवेशिक शासन के तहत जिन कृषि संबंधी का विकास हुआ वह ब्रिटिश शासन की एक संकर उपज थी और उसकी प्रकृति औपनिवेशिक थी। भारत में ब्रिटिश नमूने पर पूँजीवादी कृषि के विकास के प्रयत्न का यह एक विकृत परिणाम था। यह मौलिक स्वरूप की भोंडी नकल थी।

उपनिवेश विश्व पूँजीवादी व्यवस्था का एक अन्तरंग हिस्सा बन गया परंतु इस एकीकरण से उपनिवेश में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास में कोई मदद नहीं मिली। कई विद्वानों का मानना था कि उपनिवेश का विकास पूँजीवादी ढाँचे के तहत ही संभव था। यह भी विश्वास था कि विश्व व्यवस्था होने के कारण पूँजीवाद सभी राष्ट्रों को बुर्जुआ व्यवस्था अपनाने को बाध्य करेगा। हालांकि यह महसूस नहीं किया गया कि उपनिवेश आधुनिक साम्राज्यवादी देशों (मेट्रोपोलिस) का प्रतिबिंब नहीं बन पाए। जिस प्रकार आधुनिक साम्राज्यवादी देशों में पूँजीवादी व्यवस्था विकसित हुई उस प्रकार उपनिवेशों में उसका विकास नहीं हो सका। अतः उपनिवेशों में पूँजीवाद की शुरुआत तो हुई परंतु पूँजीवाद का विकास नहीं हुआ। पुराने ढाँचे नष्ट कर दिए गए परंतु नए ढाँचों ने विकास को प्रोत्साहित नहीं किया। इसके बजाय इस व्यवस्था ने विकास के मार्ग को अवरुद्ध किया। उपनिवेश औद्योगिक क्रांति में हिस्सा नहीं ले सके। इस प्रकार साम्राज्यवाद ने उत्पादन के कई क्षेत्रों में पूँजीवादी संबंध तो विकसित किए परंतु वहाँ पूँजीवाद का विकास नहीं हुआ। उपनिवेश में उत्पादक शक्तियों का विकास नहीं हुआ। इस प्रकार पूँजीवाद की तरह उपनिवेशवाद सामाजिक विकास का उन्नत चरण नहीं था। यह आधुनिक साम्राजयवादी पूँजीवाद की प्रतिछवि था परंतु यह छवि नकारात्मक थी और इसमें इसका गैर विकासात्मक पक्ष प्रतिबिंबित हुआ था। पूँजीवाद उत्पादक और सामाजिक शक्तियों का विकास करता है। दूसरी और उपनिवेशवाद उत्पादक और सामाजिक शक्तियों का विकास नहीं करता। विकास के इस अभाव के कारण इसमें आन्तरिक अन्तर्विरोध पैदा होते हैं।

12.4 साम्राज्यवाद के सिद्धांत

ये ज्यादातर अर्थशास्त्री और इतिहासकार थे जो साम्राज्यवाद की परिघटना को समझने का प्रयत्न कर रहे थे। उस समय इस शताब्दी के आरंभ में सभी प्रमुख बुद्धिजीवियों पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव होने के कारण, वे स्वाभाविक रूप से साम्राज्यवाद के विकास की आर्थिक व्याख्या ढूंढ रहे थे। कार्ल मार्क्स ने स्वयं साम्राज्यवाद की अवधारणा विकसित नहीं की परंतु पूँजीवादी उत्पादन पद्धति के अपने तरीके के विश्लेषण में उन्होंने इसकी ओर पर्याप्त इशारा किया है। अपनी पुस्तक *कैपिटल* में मार्क्स ने बताया है कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति मजदूरों से अधिशेष-मूल्य निकालने पर आधारित है। मजदूरों से प्राप्त अधिशेष-मूल्य से बनी वस्तुओं को बाजार की तलाश थी। जे. ए. हॉब्सन ने अपनी

पुस्तक *इम्पीरियलिज्म* (1902) में पहली बार इस विषय को विस्तार से सामने रखा है। हॉब्सन एक अंग्रेज अर्थशास्त्री था जो शुद्ध तौर पर मार्क्सवादी नहीं था। इंग्लैंड की राजनीति में वह उस विचारधारा का अनुसरण करता था जहाँ उदारवादी राजनीति लेबर में सम्मिश्रित हो जाती थी। बाद में साम्राज्यवाद संबंधी उसका विचार लेबर पार्टी का आधिकारिक मत बन गया। उसने दिखाया कि जिन देशों में पूँजीवाद का विकास हुआ था वहाँ किस प्रकार राष्ट्रीय आय का असमान वितरण हुआ था। कम आय वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा थी और इसका कारण यह था कि उनमें धन का समान वितरण नहीं हो रहा था। यदि धन का समान वितरण होता तो कम आय वालों की संख्या इतनी ज्यादा न होती (यदि राष्ट्रीय आय राष्ट्र की जनता के बीच समान रूप से वितरित कर दी जाती) पूँजीवादियों ने बहुत जल्द ही यह महसूस किया कि कम आय के कारण वे अपना माल अपने ही देश में नहीं बेच सकते थे। इसके बाद वे अन्य यूरोपीय देशों में बाजार ढूंढने लगे। परंतु वे देश भी औद्योगीकृत हो गए और वहाँ उन्हें प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा। परिणामस्वरूप वे उन देशों की ओर उन्मुख होंगे जिनके पास अपना कोई उद्योग नहीं था और जो अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकते थे। हॉब्सन के अनुसार साम्राज्यवाद के विस्तार के पीछे पूँजीवादियों द्वारा ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना एक अन्य प्रेरक शक्ति थी। निवेश और पुनर्निवेश करने के बाद पूँजीपतियों ने पाया कि अपने ही देश में वे मुनाफा नहीं कमा पाएंगे इसलिए वे मजबूर होकर दूसरी जगह निवेश करने का प्रयत्न करेंगे। अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए हॉब्सन ने कहा कि साम्राज्यवाद को जन्म देना पूँजीवाद की प्रकृति है।

यह पाया गया कि साम्राज्यवाद विकसित पूँजीवाद की एक विशेषता थी। विकसित या बाद के पूँजीवाद की परिघटना के अनेक विश्लेषण किए गए। कुछ विश्लेषकों ने दावा किया कि यह पूँजीवाद का अन्तिम और सर्वाधिक पतनशील चरण है। साम्राज्यवाद के युग के आगमन के साथ पूँजीवाद की प्रगतिशील भूमिका समाप्त हो गई थी।

विएना के एक बैंकर और पेशेवर अर्थशास्त्री आर. हिल्फरडिंग ने साम्राज्यवाद का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित किया। उनकी पुस्तक *दास फाइनेंज कैपिटल* (वित्त पूँजी) 1910 में प्रकाशित हुई। इस समय तक औद्योगिक उत्पादन के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी ब्रिटेन को पीछे छोड़ चुके थे। हिल्फरडिंग ने पाया कि इन दोनों देशों में औद्योगिक पूँजी को फैलाने और उस पर नियंत्रण स्थापित करने में बैंक (जो वित्त पूँजी का प्रतिनिधित्व करते थे) अग्रणी भूमिका अदा कर रहे हैं। हालांकि ब्रिटिश बैंक इस प्रकार की कोई भूमिका नहीं अदा कर रहे थे। परंतु पूरे औद्योगिक विश्व में वित्त और औद्योगिक पूँजीवाद के आपस में विलय की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। इससे एकाधिकार की परिस्थितियां बनी। हिल्फर डिंग के अनुसार एकाधिकार पूँजीवादियों ने साम्राज्यवादी विस्तार को प्राथमिकता दी क्योंकि इससे उन्हें उन नए क्षेत्रों पर नियंत्रण का अधिकार मिलता जहाँ से वे कच्चा माल का उत्पादन विकसित करवा सकते थे। सुरक्षित पूँजी निवेश कर सकते थे और अपने उत्पादन के लिए बाजार सुनिश्चित कर सकते थे।

हिल्फरडिंग के अनुसार वित्त पूँजी के लिए एक मजबूत राज्य की आवश्यकता होती है जो विस्तार की नीति अपना सके और नए उपनिवेश हासिल कर सके। इसके लिए मुक्त व्यापार के सिद्धांत को छोड़ना जरूरी था जिसकी शुरुआत ब्रिटेन ने की थी। धीरे-धीरे विभिन्न राष्ट्रों के बीच राष्ट्रीय एकाधिकार को लेकर टकराव शुरू हुआ। हालांकि इन राष्ट्रों के बीच राष्ट्रीय एकाधिकारों को लेकर संधि और समझौता हो सकता था तथा इसके आधार पर वे सारी दुनिया को आपस में बांट सकते थे। परंतु इसे अन्तिम समझौता नहीं समझना चाहिए क्योंकि यह अस्थाई होगा और मौका मिलते ही कोई राष्ट्र अपने एकाधिकार क्षेत्र को बढ़ाने

की कोशिश कर सकता था। इसी मनोवृत्ति के कारण बड़े राष्ट्र राज्यों की आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने अन्ततः युद्ध को जन्म दिया। हालांकि यह इस कहानी का नकारात्मक पक्ष है। इसके अलावा हिल्फरडिंग ने एकाधिकार पूँजी की सकारात्मक भूमिका का भी उल्लेख किया है। उनके अनुसार – नए क्षेत्रों में पुराने सामाजिक संबंधों को पूरी तरह बदल दिया गया। इन बिना इतिहास वाले राष्ट्रों में हजारों सालों से चली आ रही कृषि प्रथा को भी परिवर्तित किया गया ....। स्वयं पूँजीवाद ने धीरे-धीरे उत्पीड़ित जनता को उनकी अपनी स्वतंत्रता के हथियार दिए और तरीके बताए।

इस प्रकार की समझ स्पष्ट रूप से मार्क्स के पूंजीवाद की पुनर्जीवन देने की भूमिका की गलत समझ से पैदा हुई थी। भारत के दादा भाई नौरोजी और लैटिन अमेरिका के आन्द्रे गुंडर फ्रैंक ने उपनिवेशों पर साम्राज्यवाद के नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करते हुए इस समझ का जमकर विरोध किया।

रोजा लक्जेमबर्ग साम्राज्यवाद की तीसरी बड़ी सिद्धांतकार थी। उन्होंने 1913 में *एक्युमूलेशन ऑफ कैपिटल* नामक एक पुस्तक लिखी थी। उन्होंने उस प्रक्रिया का उल्लेख किया था जिसके तहत विकसित शक्तियों ने अभी तक विश्व के बचे हुए गैर पूँजीवादी बाजारों पर नियंत्रण स्थापित किया और उन्हें और भी गरीब बना दिया। उन्होंने बताया कि अल्प-विकसित गैर-यूरोपीय देशों में पूँजी के निर्यात से स्थानीय औद्योगिक विकास नहीं हो पाता। पूरी दुनिया में एक कृत्रिम श्रम विभाजन हो जाता था जिसमें अल्प विकसित देश हमेशा के लिए प्राथमिक उत्पादक बनने को बाध्य होते थे। रोजा लक्जेमबर्ग हिल्फरडिंग की इस आशंका से सहमत थीं कि राष्ट्रवादी आर्थिक प्रतिस्पर्धाओं से युद्ध होना अवश्यंभावी था।

इस विचार को रूसी बॉलशेविक पार्टी के नेता वी. आई. लेनिन ने बड़ी ही स्पष्टता से सामने रखा। उन्होंने 1916 में ज्यूरिख में *इम्पेरियलिज्म द हाइएस्ट स्टेज ऑफ कैपिटलिज्म* की रचना की। हॉब्सन के ही समान उन्होंने पूँजी के निर्यात के कारणों की व्याख्या की :

जबतक पूँजीवाद, ''पूँजीवाद रहता है तब तक अधिशेष पूँजी का उपयोग कभी भी जनता का जीवन स्तर उठाने के लिए नहीं किया जा सकेगा क्योंकि इससे पूँजीवादियों के मुनाफे में कमी होगी; इसके बदले इसका उपयोग बाहर पूँजी का निर्यात कर मुनाफा बढ़ाने के लिए किया जाएगा। खासतौर पर यह पूँजी निर्यात पिछड़े देशों में होगा।'' पूँजी के निर्यात की जरूरत इसलिए पड़ेगी क्योंकि कुछ देशों में पूँजीवाद अधिक परिपक्व हो गया था और कृषि के पिछड़ेपन और जनता की गरीबी के कारण पूँजी के लाभदायक निवेश के अवसर उपलब्ध नहीं थे।

लेनिन की पुस्तक में यह प्रतिपादित किया गया है कि दुनिया के बंटवारे के लिए तथा उपनिवेशों, प्रभाव क्षेत्रों तथा वित्त पूँजी के वितरण और पुनर्वितरण के लिए ही प्रथम विश्व युद्ध लड़ा जा रहा था और यह एक साम्राज्यवादी युद्ध था।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में साम्राज्यवाद के सिद्धांतकार इन्हीं आधारभूत मुद्दों पर बल दे रहे थे। हालांकि अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए अल्प-विकसित देशों को पूँजी के निर्यात की अवधारणा को उस लोगों ने चुनौती दी जिन्होंने यह पाया कि वास्तविकता में औद्योगिक देश अपनी अधिकांश अधिशेष पूँजी अल्प विकसित दुनिया को नहीं बल्कि अधिक औद्योगिक क्षेत्रों को निर्यात कर रहे थे। ब्रिटेन पर यह बात खासतौर पर लागू होती थी। 1914 के पहले ब्रिटिश पूँजी निर्यात का लगभग 20% ही भारत सहित सभी ब्रिटिश उपनिवेशों में निवेशित किया गया था और 20% दक्षिण अमेरिका के देशों में। प्रमुख निवेश खासतौर पर यूरोप और उत्तरी अमेरिका के अन्य पूँजीवादी देशों में किया गया था। 1914

के पहले और पुनः दो विश्व युद्धों के बीच का कम से कम तीन चौथाई हिस्सा सरकारी ऋणों के रूप में और गारंटी प्राप्त सार्वजनिक उपयोगिता के क्षेत्रों को गया। इसके अलावा बढ़ती एकाधिकार प्रवृत्तियों के बारे में हिल्फरडिंग का मत जर्मनी पर तो सटीक हो सकता था परंतु ब्रिटेन में 1920 के दशक से पहले एकाधिकार प्रतिष्ठानों के उदय की गति बहुत धीमी थी और फिर कम से कम 1914 तक दुनिया में अधिकांश विदेशी पूँजी ब्रिटेन की थी और अन्ततः यह देखा गया कि उपनिवेशों का अनौद्योगीकरण दीर्घावधि में साम्राज्यवादी ताकतों के लिए अलाभकारी सिद्ध हुआ। औपनिवेशिक जनता की गरीबी के कारण ब्रिटिश उद्योगों को अपना उत्पादन कम करना पड़ा, जिसके कारण ब्रिटेन में बेरोजगारी तेजी से बढ़ी। वस्तुतः उत्तरी अमेरिका में यूरोपीय बस्तियों और यूरोपीय देशों को किए गए निर्यात से ज्यादा मुनाफा हुआ जहाँ ब्रिटेन के माल के लिए बाजार फैल रहा था।

1929 की महामंदी के बाद साम्राज्यवाद संबंधी लेखन में एक नई प्रवृत्ति उभरी। 1931 में जोसेफ शुमपीटर की पुस्तक **इम्पेरियलिज्म ऐंड सोशल क्लासेज** प्रकाशित हुई। अपने आरंभिक वर्षों में शुमपीटर जर्मनी में रहते थे और वहीं अपना लेखन कार्य किया करते थे। इसके बाद वे संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए और वहाँ उन्होंने अपना लेखन कार्य अंग्रेजी में करना शुरू किया। वे जर्मनी के जुंकर वर्ग से बहुत प्रभावित थे। जुंकर एक सामंती भूमिपति का वर्ग था जिसने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जर्मनी के राजनैतिक और आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रिटेन द्वारा उत्तरी अमेरिका में साम्राज्य की स्थापना में सामंती कुलीनतंत्र का हाथ था। इसके आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि पूँजीवाद और साम्राज्यवाद दो अलग-अलग परिघटनाएं थी। उनके अनुसार साम्राज्यवाद का जन्म पूर्व-पूँजीवादी सामाजिक और राजनैतिक ताकतों के हाथों हुआ था। यह एक तरह से पीछे की ओर लौटना या एक प्रकार की विरासत थी। दूसरी ओर पूँजीवाद में नवाचारी पैदा हुए और विभिन्न तरीकों से उत्पादन के विभिन्न कारकों का संयोजन किया। पूँजीवाद का तर्क था कि वह मानव शक्ति का सकारात्मक उत्पादन कार्य में प्रयोग कर रहा था। दूसरी ओर युद्ध में मनुष्य की शक्ति को गैर-उत्पादक प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किया गया। पूँजीवाद के लिए क्षेत्र का अधिग्रहण करना आवश्यक नहीं था; क्षेत्रों का अधिग्रहण किए बिना भी आर्थिक विकास प्राप्त किया जा सकता था।

तीस वर्षों बाद कैम्ब्रिज इतिहासकार जैक गैलेघर और आर. ई. रॉबिन्सन ने *अफ्रीका ऐंड द विक्टोरिएन्स* नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने इस धारणा का विरोध किया कि पूँजीवाद साम्राज्यवाद को जन्म देता है। उनके अनुसार, साम्राज्यवाद यूरोपीय शक्तियों की राजनीति की देन था जो एशिया और अफ्रीका के देशों के लिए उनके द्वारा अपनाई गई पारस्परिक अवरोध की नीति में दिखाई देता था। कभी-कभी आपस में समझौता करके वे किसी क्षेत्र पर आधिपत्य न जमाकर उसे आपस में बांट लेने पर भी सहमत हो जाते थे जैसा कि उन्होंने चीन में किया था। यूरोपीय शक्तियां आपस में लड़ती-झगड़ती रहती थीं और खाली स्थानों पर कब्जा जमाने के लिए इस प्रकार होड़ मचाया करती थीं ताकि कोई दूसरा प्रतिद्वंद्वी उस पर कब्जा न कर बैठे या उसकी स्थिति वहाँ मजबूत न हो सके (स्पष्ट है कि शीत युद्ध के अनुभव ने इन लेखकों को काफी प्रभावित किया था)। गैलेघर और रॉबिनसन ने बार-बार यह स्थापित करने की कोशिश की कि पूँजीवाद के आर्थिक हित साम्राज्य निर्माण में किसी प्रकार की भूमिका अदा नहीं करते थे। उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश मंत्रिमंडल में किसी भी समय कोई व्यापारी इसका सदस्य नहीं रहा। कुलीनतंत्र ने इंग्लैंड पर शासन किया और वह व्यापार को तिरस्कार की नजर से देखता था। गैलेघर और रोबिनसन का मत निश्चित रूप से होशियारी से अपने तर्क को शास्त्रार्थ द्वारा साबित करने का प्रयास था। ब्रिटिश मंत्रिमंडल में कभी कोई व्यापारी सदस्य नहीं था, इससे कुछ भी

साबित नहीं होता है। व्यापारिक हित हमेशा अप्रत्यक्ष रूप से सक्रिय रहते थे और व्यापारिक दबाव हमेशा बना रहता था जो विभिन्न गुटों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से किसी नीति को प्रभावित करते थे। इसके अलावा इस प्रकार के विश्लेषण में केवल साम्राज्यवाद की प्रक्रिया पर ध्यान दिया गया, उसके कारणों पर नहीं।

12.5 उपनिवेशवाद : एक उत्पादन पद्धति या एक सामाजिक विन्यास

कुछ लेखक उपनिवेशवाद को उत्पादन की एक विशिष्ट पद्धति मानते हैं। हम्ज़ा अलावी उपनिवेशवाद को *'औपनिवेशिक पूँजीवाद'* की संज्ञा देते हैं। *ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आन्तरिक विभाजन और बाह्य एकीकरण तथा उपनिवेश में नहीं बल्कि साम्राज्यवादी आधुनिक देश में पूँजी के विस्तारित पुनरुत्पादन की प्राप्ति* उपनिवेशवाद की दो खास विशेषताएं हैं।

बिपनचंद्र के अनुसार, उपनिवेशवाद एक सामाजिक विन्यास है जिसमें कई प्रकार के उत्पादन पद्धतियां मौजूद रहती हैं जैसे– सामंतवाद, दास प्रथा, बधुंआ प्रथा, छोटे स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन, व्यापारी और सूदखोरों द्वारा शोषण और कृषि तथा औद्योगिक और वित्तीय पूँजीवाद। उपनिवेशवाद में विभिन्न प्रकार के उत्पादन पद्धतियों के जरिए सामाजिक अधिशेष की वसूली की जाती है। उपनिवेश के अधिशेष का उपयोग करने का संबंध आधुनिक साम्राज्यवादी देश (मेट्रोपोलिस) के बुर्जुआ वर्ग के उत्पादन के साधनों के स्वामित्व से नहीं है बल्कि इसका संबंध राज्य शक्ति पर नियंत्रण से है। दूसरी ओर पूँजीवाद के अन्तर्गत अधिशेष की वसूली उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के आधार पर होता है।

उत्पादन पद्धतियों के विभिन्न तरीकों की अवधारणा से हमें इस बात का विश्लेषण करने में मदद मिलती है कि किस प्रकार उपनिवेशवाद ने विभिन्न सामाजिक स्तरों के बीच वर्गीय अंतर्विरोध को स्वरूप प्रदान किया। इससे हमें समाज के प्रमुख वर्गों की भूमिकाओं को पहचानने और किसी भी चरण में प्राथमिक अन्तर्विरोध को समझने में मदद मिलती है। जब हम उपनिवेशवाद को उत्पादन पद्धति के बजाय एक सामाजिक विन्यास के रूप में देखते हैं तब हम वर्गीय आधारों की अपेक्षा सामाजिक आधार पर प्राथमिक अन्तर्विरोधों को देखने में सफल होते हैं। इसीलिए औपनिवेशिक शक्ति के खिलाफ वर्ग-संघर्ष नहीं हुआ बल्कि एक राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई। यह आंदोलन आरंभ से ही आर्थिक न होकर राजनैतिक था। वर्गों ने वर्ग संगठनों के जरिए उपनिवेश विरोधी आंदोलन में हिस्सा नहीं लिया बल्कि उन्होंने जनता के एक हिस्से के रूप में भाग लिया।

उपनिवेशवाद की निम्नलिखित चार आधारभूत विशेषताएं हैं :

1) विश्व पूँजीवादी व्यवस्था के साथ उपनिवेश का एकीकरण जिसमें उपनिवेश की स्थिति अधीनता की होती है। आधुनिक महानगरीय साम्राज्यवादी देश की अर्थव्यवस्था की जरूरतें और इसके पूँजीपति वर्ग उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था और समाज के आधारभूत मुद्दों का निर्धारण करते थे। विश्व बाजार से सम्पर्क की अपेक्षा यह अधीनता ज्यादा निर्णायक थी। हालांकि स्वतंत्र पूँजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं भी विश्व बाजार से जुड़ीं हुई थीं।

2) आरघिरी इमैनूएल और समीर अमीन ने उपनिवेशवाद को *औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के आन्तरिक विभाजन और असमान विनियम* की अवधारणाओं में समेट दिया। उनका यह मानना था कि विश्व बाजार और महानगरीय साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था वर्चस्व के माध्यम से उपनिवेशों के कई विभाजित भाग सक्रिय होकर केंद्रीय अर्थव्यवस्था से जुड़

जाते हैं। उपनिवेशों के कृषि क्षेत्र का संबंध इसके औद्योगिक क्षेत्र से नहीं होता बल्कि यह विश्व पूँजीवादी बाजार और महानगरीय केन्द्रों के बाजारों से होता है। मार्क्स और एंगल्स ने इसी शोषणात्मक अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन की प्रक्रिया का उल्लेख किया था। इन आधुनिक साम्राज्यवादी देशों के पास उच्च प्रौद्योगिकी, उच्च उत्पादकता, और ऊंची मजदूरी की दरों से उत्पादित वस्तुएं होती थी जबकि उपनिवेशों के पास निम्न प्रौद्योगिकी, निम्न उत्पादकता और निम्न मजदूरी दरों से उत्पादित वस्तुएं होती थी। इसी प्रकार उपनिवेश कच्चे माल का उत्पादन करते थे जबकि आधुनिक साम्राज्यवादी देश विर्निमित वस्तुओं का निर्माण करते थे। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में रेलवे का विकास भारतीय उद्योग के लिए नहीं बल्कि ब्रिटिश उद्योग के हितों की रक्षा करने के लिए किया गया था। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शोषण का एक साधन बन गया।

3) *धन की निकासी* उपनिवेशवाद की तीसरी विशेषता है। इसके जरिए निर्यात अधिशेष का एकतरफा हस्तांतरण होता है और उपनिवेशों से महानगरीय साम्राज्यवादी देशों की ओर धन का बहाव होता है। आरंभिक भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस पर बल दिया था। सैनिक और असैनिक सेवाओं पर औपनिवेशिक राज्य के व्यय का एक बड़ा हिस्सा भी अधिशेष की बाह्य निकासी का एक उदाहरण था। अतः अधिशेष का उत्पादन उपनिवेशों में होता था परंतु इसका संचय विदेश में। हमजा अलावी ने इस प्रक्रिया को *विकृत विस्तारित पुनरुत्पादन* (डिफॉर्म्ड एक्सटेंडेड रिप्रोडक्शन) कहा है।

4) *विदेशी राजनैतिक आधिपत्य* या औपनिवेशिक राज्य की मौजूदगी और भूमिका इसकी चौथी आधारभूत विशेषता है।

बोध प्रश्न 1

1) उपनिवेशवाद क्या है? लगभग 50 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

2) साम्राज्यवाद के सिद्धांतों पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

3) लगभग 100 शब्दों में उपनिवेशवाद की आधारभूत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

12.6 औपनिवेशिक राज्य

औपनिवेशिक राज्य में औपनिवेशिक क्या है ?

कुछ लोगों के विचार में यह एक वर्ग के बजाए सम्पूर्ण समाज के शोषण का एक माध्यम है। औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के संरचना और कार्य-प्रणाली में औपनिवेशिक राज्य अहम हस्तक्षेप करने वाली और अभिन्न भूमिका निभाता है। उपनिवेश के नियंत्रण और शोषण करने में गृह देश के पूँजीपति वर्ग का एक साधन है। औपनिवेशिक राज्य समग्र रूप से मातृ-देश के पूँजीपति वर्ग के दीर्घावधि हितों को पूरा करता है। यह बुर्जुआ वर्ग के अलग-अलग प्रतिस्पर्द्धा से युक्त हितों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जो एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे होते हैं। इसके विपरीत पूँजीवाद में राज्य किसी एक शक्तिशाली वर्ग के हाथ में दूसरे पर प्रभुत्व जमाने का एक साधन होता है।

उपनिवेशवाद विदेशी शासक वर्ग और सम्पूर्ण औपनिवेशिक जनता के बीच का संबंध है। उपनिवेशवाद के तहत कोई भी देशी सामाजिक वर्ग शासक वर्ग में शामिल नहीं होते। उपनिवेश के सभी देशी वर्ग अधीनस्थ होते हैं – यहाँ तक कि सम्पत्तिवान समृद्ध वर्ग भी उपनिवेशवादी व्यवस्था में कनिष्ठ साझेदार या अधीनस्थ साझेदार नहीं होते हैं। किसी भी महानगरीय साम्राज्यवादी देश के बुर्जुआ वर्ग के लिए उनके हितों की बलि चढ़ाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, राज्य ने कारखाना अधिनियम बनाया जिसका देशी बुर्जुआ वर्ग ने स्वागत नहीं किया क्योंकि इससे विदेशी, आयात की गई वस्तुएं भारतीय वस्तुओं से बेहतर प्रतिस्पर्घा करने की स्थिति में रहती हैं। इसलिए यहाँ तक की उपनिवेश का सबसे ऊपरी वर्ग भी उपनिवेशवाद का विरोध कर सकता है क्योंकि यह उनके हितों के खिलाफ जाता है। यह याद रखना आवश्यक है कि पोलैंड और मिस्र में उपनिवेशवाद के विरोध में आंदोलन का नेतृत्व बड़े भूमिपतियों ने किया था। उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों में यह एक बड़ा अन्तर है। अर्द्ध-उपनिवेशों में देशी दलाल वर्ग शासक वर्ग का हिस्सा होता है। अर्द्ध-उपनिवेशों का उच्च वर्ग शासकीय वर्ग का हिस्सा होता है। अरूण बोस ने बिल्कुल सही कहा है कि उपनिवेश में जहाँ महानगरीय साम्राज्यवादी देश का प्रभुत्वशाली वर्ग राज्य की प्रकृति का निर्धारण करता है वहाँ एक अर्द्ध-उपनिवेश में राज्य की वर्ग प्रकृति राजनैतिक रूप से प्रभुत्वशाली वर्ग की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है।

औपनिवेशिक राज्य की भूमिका पूँजीवादी राज्य से अधिक है। यह उपनिवेशवाद का संरचना करता हैं यह एक अधिसंरचना मात्र नहीं होती बल्कि आर्थिक आधार का एक हिस्सा होता है। यह न केवल शासक वर्ग को अधिशेष वसूल करने की क्षमता प्रदान करता है बल्कि स्वयं अधिशेष प्राप्त करने का एक प्रमुख जरिया होता है। पूँजीवाद के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने से शासक वर्ग को राज्य पर नियंत्रण और आधिपत्य रखने में मदद मिलती है। उपनिवेशवाद के तहत औपनिवेशिक राज्य पर दूसरे देश का नियंत्रण होने के कारण उस देश का महानगरीय शासक वर्ग औपनिवेशिक समाज पर नियंत्रण रखता है और उसका शोषण करता है। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के कारण नहीं बल्कि राज्य शक्ति पर नियंत्रण स्थापित होने से सामाजिक अधिशेष पर उनका नियंत्रण कायम होता है। उदाहरण के लिए, भारत में औपनिवेशिक राज्य का उत्पादन के साधनों पर कोई खास मालिकाना हक नहीं था परंतु फिर भी उसके पास काफी शक्ति थी।

औपनिवेशिक राज्य कानून और व्यवस्था लागू करता था और आंतरिक तथा बाह्य खतरों से अपनी सुरक्षा की गांरटी देता था। औपनिवेशिक हितों को खतरा पहुँचाने वाली देशी आर्थिक शक्तियों और प्रक्रियाओं को दबा दिया जाता था। यह अधिशेष वसूली का एक जरिया था।

यह उपनिवेश में रहने वाले लोगों में एकता नहीं होने देता और इसके लिए जाति, वर्ग, समुदाय आदि की पहचानों को बढ़ावा देता है। राज्य पूँजी द्वारा वसूली की प्रक्रिया जिसमें सामानों और सेवाओं का उत्पादन शामिल था के लिए माहौल बनाने में प्रयत्नशील रहता था। उपनिवेशों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और वैधानिक ढाँचों को बदलना एक महत्वपूर्ण कार्य था ताकि बड़े पैमाने पर पुनरुत्पादन किया जा सके। परंतु राज्य के निगरानी कार्यों और विकासात्मक कार्यों में अन्तर्विरोध एक समस्या होती है। मौजूदा अल्प-संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा होती है और इससे विकास को ही हानि पहुँचती हैं। साम्राज्यवाद विरोधी ताकतों के लिए उपनिवेशवाद की शोषणात्मक प्रकृति को बेनकाब करना बहुत आसान है क्योंकि औपनिवेशिक ढाँचे और राज्य के बीच स्पष्ट और सीधा संबंध होता था। अतः यहाँ आंदोलन को राजनैतिक रूप देने में आसानी होती है। विकासशील देशों में राज्य और अर्थव्यवस्था के बीच का संबंध इतना स्पष्ट न होने के कारण ऐसा करना मुश्किल होता था। अतः औपनिवेशिक नियंत्रण को बेनकाब करना आसान था और गृह देश के औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग से इसका संबंध स्थापित किया जा सकता था। राज्य पर विदेशियों का स्पष्ट नियंत्रण होता था और नीति तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में उपनिवेश की जनता की कोई भूमिका नहीं थी। यदि पूँजीवादी राज्य से इसकी तुलना करें तो औपनिवेशिक राज्य नेतृत्व और सहमति के बजाए आधिपत्य और दमन पर आधारित था। अतएव यहाँ साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियां तेजी से उभरीं। इसके बाद राज्य को संकट का सामना करना पड़। हालांकि सिक्के का एक दूसरा पहलू यह है कि औपनिवेशिक राज्य एक बुर्जुआ राज्य था, इसमें नियम-कानून, संपत्ति संबंध, नौकरशाही को लागू किया गया और यहाँ तक कि यह अर्ध-निरंकुश और अर्ध-प्रजातांत्रिक राज्य में भी विकसित हो सकता था। अतएव उपनिवेश में संवैधानिक व्यवस्था की गुंजाइश होती थी।

औपनिवेशिक विचारधारा के प्रश्न पर अभी तक पर्याप्त रूप में विचार नहीं किया गया है। अलग-अलग चरणों से अलग-अलग विचारधाराएं जुड़ी हैं — दूसरे चरण में इसका संबंध विकास से था और तीसरे चरण में अ-राजनीतिकरण और हितकारिता से जुड़ा था। जब गैर-भागीदारी की नीति राजनीति में काम नहीं करती तो वफादारी की राजनीति को बढ़ावा दिया जाता है।

12.7 उपनिवेशवाद के चरण

मार्क्स ने अपने लेखन में उपनिवेशवाद के दो चरण बताएं हैं — एकाधिकार व्यापार और मुक्त व्यापार। अपनी प्रमुख पुस्तक *इंडिया टूडे* में रजनी पाम दत्त ने इसमें एक तीसरा चरण जोड़ा है जिसे वित्तीय साम्राज्यवाद कहा है और यह लेनिन के दर्शन पर आधारित है। समीर आमीन और कुछ विद्वानों के अनुसार, यह तीसरा चरण ही उपनिवेशवाद को जन्म देता है। विभिन्न चरण अपने शुद्ध रूप में मौजूद नहीं होते और न ही इन चरणों के बीच कोई बहुत भेद होता है। प्रत्येक उपनिवेश में इन चरणों की समयावधि में अन्तर होता है। कुछ देश केवल एक या दो चरणों से ही गुजरते हैं; या वहाँ अन्य चरण विकसित ही नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में तीसरे चरण की शुरुआत नहीं हो सकी जबकि मिस्र में पहले और दूसरे चरण विकसित नहीं हुए थे और इन्डोनेशिया में दूसरा चरण ही देखने को नहीं मिलता है।

उपनिवेशवाद विश्व पूँजीवाद के साथ उपनिवेश की अर्थव्यवस्था और समाज का सम्पूर्ण परंतु जटिल गठजोड़ और एकीकरण है, जो विभिन्न चरणों से उभरता हुआ दो शताब्दियों तक कायम रहा था। समय के साथ-साथ अधीनता का स्वरूप बदलता रहता है परंतु उपनिवेश की अधीनता बरकरार रहती थी। जैसे ही अधिशेष वसूली या अधीनता का स्वरूप

बदलता था उसी तरह औपनिवेशिक नीति, राज्य और इसकी संस्थाएं, संस्कृति, विचार और विचारधाराएं भी बदलती रहती थीं। ये चरण विश्व व्यवस्था के रूप में पूँजीवाद के ऐतिहासिक विकास का परिणाम थे। वे महानगरीय साम्राज्यवादी देश के सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विकास के बदलते स्वरूपों तथा विश्व अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में उसकी बदलती स्थिति का भी परिणाम थे। उपनिवेश का अपना ऐतिहासिक विकास भी चरण के स्वरूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

12.7.1 पहला चरण

इस चरण के दो आधारभूत उद्देश्य थे :

व्यापार पर एकाधिकारः उदारहण के लिए, ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारतीय माल सस्ते में खरीदने के लिए व्यापार पर एकाधिकार आवश्यक था। युद्ध के जरिए यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों को दूर रखा गया। भारतीय व्यापारियों को लाभपूर्ण व्यापार से वंचित करने के लिए राजनैतिक स्तर पर क्षेत्रों को जीत कर उन पर अधिकार जमाया गया।

राज्य शक्ति का उपयोग कर राजस्व या अधिशेष की सीधी वसूली की जाती थी। यूरोपीय शक्तियों और देशी राजाओं के खिलाफ युद्ध करने के लिए बड़ी मात्रा में धन की जरूरत होती थी। यह धन उपनिवेश के राजस्व से ही प्राप्त किया जा सकता था। उपनिवेश से वसूले गए राजस्व से औपनिवेशिक वस्तुएं भी खरीदी जाती थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि साम्राज्यवादी देश स्वयं कई जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते थे और उपनिवेशों से खरीदे गए माल के लिए सोने और चांदी में भुगतान करना उस समय के वाणिज्यवादी सोच के अनुकूल नहीं था। उपनिवेशों पर राजनैतिक आधिपत्य स्थापित करने के बाद उनका शोषण किया गया तथा उनके अधिशेष पर अधिकार कर लिया गया। उपनिवेश से प्राप्त राजस्वों से पदाधिकारियों को ऊंचे वेतन दिए गए और कम्पनियों तथा निगमों ने मुनाफा कमाया। यह माना जाता है कि प्रथम चरण में भारत में ब्रिटेन को होने वाले धन की निकासी काफी ज्यादा था। यह उस समय ब्रिटेन की राष्ट्रीय आय का 2% से लेकर 3% तक था।

यह अवश्य याद रखना चाहिए कि इस चरण में प्रशासन, न्यायिक व्यवस्था, परिवहन, और संचार के साधन, कृषीय और औद्योगिक उत्पादन के तरीकों, व्यवसाय प्रबंधन या आर्थिक संगठन के रूप, शिक्षा या बौद्धिक क्षेत्र, संस्कृति और सामाजिक संगठन में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं किया गया। परिवर्तन केवल सैन्य संगठन और प्रौद्योगिक तथा राजस्व प्रशासन के ऊपरी हिस्से में किया गया। हस्तक्षेप न करने का कारण यह था कि प्रथम चरण में उपनिवेशवाद परम्परागत अर्थव्यवस्था और राजनैतिक व्यवस्था पर अध्यारोपित कर दिया गया था। यदि आर्थिक अधिशेष वसूलने में परेशानी नहीं थी तो पहले के शासकों द्वारा जितना गाँवों को केंद्रीय अर्थव्यवस्था से जोड़ लिया गया था, उससे अधिक उपाय करने की जरूरत नहीं थी। उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था या राजनैतिक ढाँचे में किसी प्रकार का आधारभूत रूपांतरण करना अनिवार्य नहीं था। इसलिए इस विचारधारा में विकास के लिए कोई स्थान नहीं था और परंपरागत मूल्यों, धर्म, रीति रिवाज, मान्यताओं की समझ और आलोचना की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। अध्ययन की परंपरागत प्रणालियों को प्रोत्साहित किया गया और देशी भाषाओं में प्रशासन का काम काज चलाया गया।

12.7.2 दूसरा चरण

उपनिवेशवाद के दूसरे चरण को मुक्त व्यापार के नाम से जाना जाता है। औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग, जिसने व्यापारिक कम्पनियों का स्थान ले लिया, ने लूट द्वारा अधिशेष की वसूली करने

के तरीके का इस आधार पर विरोध किया कि सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को बचाकर रखना जरूरी है। साम्राज्यवादी देशों के औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग का हित उपनिवेश में इसलिए था कि वहाँ उनके तैयार माल का बाजार मौजूद था। इसके लिए उपनिवेश से निर्यात का बढ़ना जरूरी था ताकि आयातित तैयार माल को वे खरीद सकें। साम्राज्यवादी महानगरीय देश का बुर्जुआ वर्ग उपनिवेशों को कच्चा माल के उत्पादक के रूप में विकसित करना चाहता था ताकि अपने साम्राज्य के बाहर के स्रोतों पर उसे निर्भर न रहना पड़े। उपनिवेश से निर्यात बढ़ने से इन्हें ऊंचे वेतन देने और व्यापारियों को अधिक मुनाफा देने में भी सहूलियत होती। व्यापार को सामाजिक अधिशेष प्राप्त करने का माध्यम बनाया गया।

नए तरीके से शोषण करने के लिए आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैधानिक ढाँचों को रूपांतरित करना जरूरी था। इसके लिए विकास और आधुनिकीकरण का नारा दिया गया। उपनिवेश को विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था और मातृ-राष्ट्र से जोड़ा गया। विदेशी व्यापार पर सारे प्रतिबंध और शुल्क हटा लिए गए। पूँजीपतियों को खेती करने, व्यापार करने और परिवहन, खनन और उद्योग के क्षेत्र में कार्य करने की छूट दी गई। पूँजीवादी खेती की शुरुआत की गई। कच्चे मालों को बन्दरगाहों से बड़ी मात्रा में निर्यात करने के लिए रेलवे का विस्तार किया गया और आधुनिक डाक और तार व्यवस्था स्थापित की गई। प्रशासन का विस्तार किया गया ताकि आयातित माल आसानी से गाँवों में भेजा जा सके और वहाँ से कच्चा माल निकाला जा सके। पूँजीवादी-वाणिज्यिक संबंध लागू किए गए। अनुबंधों को वैधता प्रदान करने के लिए वैधानिक व्यवस्था में सुधार किया गया। हालांकि व्यक्तिगत कानूनों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। नए प्रशासन को संभालने के लिए आधुनिक शिक्षा लागू की गई। यह उम्मीद की गई थी कि पश्चिमीकरण से आयातित वस्तुओं की माँग बढ़ेगी।

राजनैतिक विचारधारा के क्षेत्र में उदारवादी साम्राज्यवाद पर विशेष बल दिया गया। उपनिवेश के लोगों को स्वशासन सिखाने के लिए यह दृष्टिकोण सामने आया। यह विश्वास जाहिर किया गया कि औपचारिक राजनैतिक नियंत्रण समाप्त होने के बावजूद आर्थिक संबंध कायम रहेंगे। आधुनिकीकरण की इस अवधारणा के साथ-साथ मौजूदा सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन शैलियों की आलोचना की गई। विकास को विचारधारा के रूप में सामने रखा गया। इसके पीछे मंशा यह थी कि देश को जानबूझकर अल्पविकसित न रखा जाए। अल्पविकास को उद्देश्य नहीं बनाया गया परंतु उपनिवेशवाद के तहत बाजारों की कार्य-पद्धति और इसके आन्तरिक अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरूप यही होना था। अतएव अल्पविकास का नहीं बल्कि केवल विकास का ही साम्राज्यवादी सिद्धांत मौजूद था।

12.7.3 तीसरा चरण

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक विश्व पूँजीवाद की प्रकृति में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। दुनिया में इंग्लैंड के अलावा अन्य देशों में भी औद्योगीकरण फैला और ब्रिटेन की सर्वोच्चता समाप्त हुई। बाजार, कच्चे माल और खाद्यान्न के स्रोतों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। काफी पूँजी जमा हो गई और इसे निवेशित करने के लिए अच्छे और लाभप्रद अवसरों की तलाश की जाने लगी। जिन देशों के पास उपनिवेश थे वे बेहतर स्थिति में थे क्योंकि इन क्षेत्रों पर उनका एकाधिकार था। इसके अलावा अपने घरेलू राजनैतिक असंतोष से लोगों का ध्यान हटाने और आपस में संघर्षरत सामाजिक वर्गों के हितों को एक साथ जोड़ने के लिए साम्राज्य और इसकी प्रतिष्ठा का इस्तेमाल किया जाता था।

उपनिवेशवाद के तीसरे चरण में उपनिवेश पर नियंत्रण अत्यंत सघन हो गया। प्रतिक्रियावादी विचारधारा को प्रोत्साहन दिया गया। प्रशासन व्यापक और कुशल हो गया तथा नौकरशाही

का नियंत्रण बढ़ा दिया गया क्योंकि सघन नियंत्रण के लिए यह आवश्यक था। इस समय स्वशासन की बात नहीं की गयी। इसके स्थान पर हितकारी तानाशाही नई विचारधारा के रूप में सामने आई। इसके अनुसार औपनिवेशिक जनता को एक शिशु के रूप में देखा गया जिसके लिए हमेशा एक अभिभावक की जरूरत थी। द्वितीय चरण में जिस आधुनिकीकरण और पश्चिमी शिक्षा की बात की गयी थी तीसरे चरण में उसका कोई जिक्र नहीं था।

उपनिवेशवाद के भीतर दो प्रकार का अन्तर्विरोध था – एक बाहरी था, जो उपनिवेश के लोगों और व्यवस्था के बीच था जो साम्राज्यवादी विरोधी आंदोलनों के रूप में प्रकट हुआ। दूसरा आन्तरिक अन्तर्विरोध था– जिसमें उपनिवेश द्वारा महानगरीय साम्राज्यवादी देशों के पूँजीपति वर्ग के हितों की पूर्ति कर पाने में असमर्थ होना था। तीसरे चरण में महानगरीय साम्राज्यवादी देशों की पूँजी का इस्तेमाल कर पाना या कच्चे माल के निर्यात को बढ़ाना संभव नहीं था। इस कारण से सीमित आधुनिकीकरण की नीति लागू की गई। उपनिवेशवाद की अवधारणा में निहित अंतर्विरोध सामने आए तथा अल्प-विकास ने उपनिवेश के शोषण में बाधा पहुँचाई।

तीसरे चरण की स्थिति उपनिवेशवाद के अन्तर्गत सामान्यतः नहीं उत्पन्न होती। अधिकांश पुराने उपनिवेशों से पूँजी का निर्यात किया जाता रहा। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि उपनिवेशवाद में इन उपनिवेशों की अर्थव्यवस्थाओं को इतना खोखला कर दिया जाता था कि उनमें पूँजी निवेश का सही उपयोग करने की क्षमता नहीं नहीं रह जाती थी। उपनिवेशवाद द्वारा उपनिवेशों की सारी क्षमताओं का दोहन किए जाने पर नव स्थापित उद्योगों में बने मालों की माँग कैसे संभव थी? अभी तक उन उत्पादों में पूँजी निवेशित की जा रही थी जिसके लिए विदेश में बाजार उपलब्ध था या निर्यातों के लिए आवश्यक अधिसंरचनाओं में पूँजी निवेशित की गई। कई उपनिवेशों में शोषण के पुराने रूप जारी रहे। उदाहरण के लिए, भारत में तीसरे चरण में भी पिछले दो पुराने रूप मौजूद रहे।

बोध प्रश्न 2

1) औपनिवेशिक राज्य की खास विशिष्टताएं क्या हैं? लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) प्रथम चरण और द्वितीय चरण में उपनिवेशवाद में क्या अंतर होता है?

....

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

12.8 सारांश

यूरोपीय शक्तियों द्वारा औपनिवेशिक आधिपत्य और इन उपनिवेशों को आधुनिक विश्व से जोड़ने वाली अर्थव्यवस्था पर विचार किए बिना आधुनिक यूरोप का इतिहास अधूरा रहेगा। इस व्यवस्था को उपनिवेशवाद के नाम से जाना जाता था। एक ओर यूरोप इन उपनिवेशों से प्राप्त अधिशेष के आधार पर प्रगति और समृद्धि के पथ पर अग्रसर हो रहा था वहीं औपनिवेशिक शासन के अधीनस्थ क्षेत्र दिन-प्रतिदिन पिछड़ते चले गए। औपनिवेशिक आधिपत्य के परिणामस्वरूप विश्व का अधिकांश हिस्सा अल्प विकसित रह गया।

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उत्तर के लिए भाग 12.2 देखिए।

2) उत्तर के लिए भाग 12.4 देखिए।

3) उत्तर के लिए भाग 12.2 और 12.5 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 12.6 देखिए।

2) भाग 12.7 देखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY